# पर्यटन कूटनीति भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक आग्रह

अमित त्यागी*

## सारांश

देशों के बीच परस्पर संबंध कूटनीति हैं। ये संबंध नीयत के आधार पर विश्वसनीय बनते हैं। कुछ विचारधाराएँ वसुधेव कुटुंबकम के आधार सम्पूर्ण धरा को अपना मानकर चलती हैं तो कुछ विचारधाराएँ सम्पूर्ण विश्व को अपने उपभोग की वस्तु मानती हैं। जैसे दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजों के आने पर कहा जाता है कि वह जब आए तब उनके पास बाइबल थी और हमारे पास हमारी जमीने। 100 साल के बाद हमारे पास उनकी बाइबल थी और उनके पास हमारी जमीने। सेवा का भाव दिखाकर, धर्मांतरण के द्वारा और उपभोग का प्रयोग करके, देशों की संस्कृति को नष्ट करने का यह अनुपम उद्धारण है। पश्चिम और वहाँ से उपजे पंथों की विचारधारा रेखीय है। जन्म, जीवन, मरण और उसके बाद क़यामत/जजमेंट डे, इसलिए ये विचारधारा मृत्यु के बाद क़यामत/जजमेंट डे को महत्वपूर्ण मानती हैं। सनातनी जीवन दर्शन रेखिय है जिसमे जन्म, जीवन, मरण एवं फिर पुनर्जन्म की अवधारणा है। इसलिए यह जीवन दर्शन प्रकृति और सृष्टि को उपभोग की वस्तु न मानकर आने वाली पीढ़ियों के लिए सँजोने का कार्य करता है। यही कारण है कि भारतीय भूभाग में पुरातन शिल्प भी बेजोड़ है, यहाँ के त्यौहार भी प्रकृति केन्द्रित हैं। यहाँ के लोग जहां गये उन्होने वहाँ की संस्कृति को नष्ट नहीं किया बल्कि वहाँ अपनी ज्ञान परंपरा को प्रकाशमान किया। भारत के समृद्धशाली वैभव को समझने विदेशी भारत आते हैं और उनकी संख्या जिस तरह निरंतर बढ़ रही है, वह उत्साहित करने वाली है। सत्ता के द्वारा किसी देश पर राज करने से महत्वपूर्ण है दिलो पर राज करना। नागरिकों का धर्म परिवर्तन करने से बेहतर हैं उन्हे अपने आचरण से प्रभावित करना। बस यही वह सनातनी विचार है जिसे पर्यटन कूटनीति कहा जाता है।

* एमबीए, एलएलएम (मानवाधिकार), वरिष्ठ स्तंभकार, विधि विशेषज्ञ एवं गीतकार

## प्रस्तावना

आज दुनिया में सिर्फ स्वयं को बेहतर दिखाने और वर्चस्व की जंग मची हुई है। रूस-यूक्रेन युद्ध, इजरायल-फ्लिस्तीन युद्ध और अन्य देशों के बीच इस समय वैश्विक युद्धों की भरमार है। धन बल के द्वारा एक देश दुसरे देश पर विजय पाने को आमादा है। व्यक्तिगत स्तर पर इन देशों के समर्थक कभी कभी इतने ज़्यादा प्रतिस्पर्धात्मक हो जाते हैं कि यदि कोई कानूनी नियंत्रण ना हो तो वह दूसरे व्यक्ति को मारने को तैयार है। छोटी छोटी बात पर लोगों का आक्रामक हो जाना और जगह जगह हो रही हिंसा इस बात का सबूत है कि शायद मानवता ही आज खतरे में है। इस खतरे को पैदा भी उन्होने किया है जो इसकी रक्षा करने का दंभ भरते हैं। ऐसे में विश्व शांति और आध्यात्मिक उन्नति के रूप में इन देशों के लोग सबसे प्राचीन और समृद्ध सनातनी सभ्यता को समझने भारत आते हैं। इस बात को आंकड़ों से समझा जा सकता है। ( तालिका 2.9.1) । विदेशी पर्यटकों की भारत भ्रमण के दौरान रुकने की अवधि इस बात का आभास देती है कि उनका उद्देश्य क्या है ? जैसे आंकड़े बताते हैं कि कनाडा से आने वाले पर्यटक औसतन 44.84 दिन भारत में प्रवास करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका से आने वाले पर्यटक 34.33 दिन, यमन से आने वाले 68 दिन, अफ़ग़ानिस्तान से आने वाले 62.90 दिन, पाकिस्तान से आने वाए 63.68 दिन, इन्डोनेशिया से आने वाले 24.65 दिन, मयंमार से आने वाले 31.89 दिन, चीन से आने वाले 64.50 दिन, जापान से 32.84 दिन का औसतन प्रवास करते हैं। प्रवास की अवधि विदेशी पर्यटकों के मनोविज्ञान को काफी कुछ समझा सकती है। अब वर्तमान वैश्विक परिस्थिति को समझने के लिए हमें आज से आठ दशक पीछे जाना होगा।

विश्व में मानवाधिकार के महत्व को समझते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1948 में 10 दिसम्बर को मानवाधिकार दिवस की शुरुआत की थी। भारत में 26 सिंतबर, 1993 से मानव अधिकार कानून अमल में लाया गया। 1940 के दौरान दो विश्वयुद्ध के कारण मित्र और शत्रु राष्ट्र नाम के दोनो गुटों के धन संसाधन खत्म हो गये। इन कुल आठ देशों को इन युद्धों में धन-जन की खूब हानि हुयी। 'धन' की हानि की भरपाई के

लिए इन आठ देशों ने बाकी के लगभग डेढ़ सौ देशों की धन सम्पदा, प्राकृतिक एवं खनिज संसाधनों पर नज़रें गड़ानी शुरू की। 'जन' की भरपाई के लिए धर्मांतरण का काम करने वाली एनजीओ को इन देशों में स्थापित करने की परिकल्पना विकसित की। बिना किसी कारण किसी के घर में घुसना आसान नहीं होता इसलिए ये देश विकसित और विकासशील का अंतर पैदा करने लगे। एक सुनियोजित योजना के अंतर्गत खुद को विकसित राष्ट्र बताकर अन्य देशों को विकासशील एवं गरीब देशों की श्रेणी में रख दिया गया। इसके बाद विकासशील एवं गरीब देशों में यह देश मानवाधिकार हनन रोकने के नाम पर घुस गये। धीरे धीरे उन्होने वहाँ पैठ बनानी शुरू कर दी। चूंकि हर देश में कुछ आंतरिक असंतोष होता है उसे यह विकसित देश हवा देने लगे। स्थानीय असंतोष, उस कारण होने वाली हिंसा एवं लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं में कमी को अन्तराष्ट्रिय मानवाधिकार का हनन बताकर खूब प्रचारित किया गया।

खाड़ी देशों में तेल का विशाल भंडार विकसित देशों को दिखा तो उन्हे वहाँ मानवाधिकार का हनन दिखने लगा। भारत में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता थी वहाँ मानवाधिकार की आड़ में एनजीओ जड़े जमाने लगीं। भारत और पाकिस्तान के बीच अस्थिरता रहने पर दोनों देशों को हथियार बेचने के लिए भारतीय उपमहाद्वीप को भी खूब अस्थिर किया गया। अफ़ग़ानिस्तान में पहले लादेन को खड़ा किया गया इसके बाद उसे खत्म किया गया। इराक में सद्दाम हुसैन की बलि चढ़ी तो ओसामा, बगदादी इस कड़ी के अगले नाम रहे। विश्व में जहां जहां मानवाधिकार हनन की बात सुनने को मिलती है वहाँ वहाँ विकसित देशों के द्वारा बोयी गयी अस्थिरता ही प्रमुख कारण बनकर सामने उभरती है। भारत में मानवाधिकार का झुनझुना थोड़ा कम बजता है क्योंकि जिस समय अन्तराष्ट्रिय मानवाधिकार पर विमर्श चल रहा था उस समय काल में ही भारत के संविधान का निर्माण चल रहा था। जो भी अन्तराष्ट्रिय मानवाधिकार हैं वह भारत में मूल अधिकार बनाकर संविधान में समाहित कर दिये गये। भारत की संयुक्त परिवार व्यवस्था एवंअतिथि को भगवान समझने का संस्कार विदेशी सभ्यताओं को प्रेम और आनंद का वास्तविक अर्थ समझा देता है। इसके बाद किसी मानवाधिकार का कोई अस्तित्व नहीं बचता है। यदि भारतीय वेदों और शास्त्रों की

चर्चा करें तो सिर्फ एक श्लोक में सारे मानवाधिकार समाहित हैं। सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे संतु निरामय:, सर्वे भद्राणी पश्यंतु, माँ कश्चित दुखभाग भवेत। वैश्विक अस्थिरता के मध्य भारत की आध्यात्मिक चेतना, आर्थिक संरचना, शिल्प निर्माण आदि को समझने विदेशियों का भारत आना और एक श्लोक का अर्थ ही भारत की पर्यटन कूटनीति का सार है।

## भारतीय शिल्प एवं आर्थिक केंद्र मंदिर

भारत का इतिहास समृद्ध और गौरवशाली रहा है। भारत में परम्पराएँ, त्यौहार, शिल्प और ज्ञान का अपार भंडार है जिस पर शोध करने विदेशी भारत में आते हैं। भारत में रंगों का पर्व होली हो या दीपों का पर्व दीपावली, दोनों त्यौहारों की परम्पराएँ विदेशियों को आकर्षित करती हैं। भारत के दक्षिण में मंदिरों का शिल्प अद्भुत एवं अकल्पनीय है। लेपाक्षी मंदिर, मीनाक्षी मंदिर बेजोड़ शिल्प हैं। ज्ञान के रूप में भारत अनेक विद्याओं का जनक एवं ज्ञाता रहा है। आयुर्वेदिक जीवन शैली का प्रमुख तत्व योग अब अन्तराष्ट्रिय योग दिवस के रूप में सम्पूर्ण विश्व में भारत का ध्वजवाहक है। धार्मिक रूप से देखें तो बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए उत्तर भारत के कई स्थान पूजनीय हैं। सारनाथ, सांची, बौद्ध गया में आने वाले बौद्ध भारतीयता में अपनी जड़ें महसूस करते हैं। भारतीय मंदिर शिल्प और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का केंद्र हैं, किन्तु एक समय ऐसा भी था जब यह भारत की आर्थिक संरचना का प्रमुख केंद्र थे। यह आर्थिक गतिविधियों के संचालक और नियामक थे।

इसको समझने के लिए पहले कुछ आंकड़ों पर गौर करते हैं। (तालिका 2.1.1) 1981 में भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या 1.28 मिलियन थी। उस समय पर्यटकों में वृद्धि दर 2 प्रतिशत थी। 1991 में पर्यटकों की संख्या 1.68 मिलियन तक बढ़ी किन्तु वृद्धि दर नकारात्मक -1.7 प्रतिशत रही। 2001 में विदेशी पर्यटक 2.54 मिलयन रहे और तब भी वृद्धि दर नकारात्मक -4.2 प्रतिशत रही। 2011 में विदेशी पर्यटकों की संख्या 9.2 प्रतिशत वृद्धि दर के साथ 6.31 मिलियन रही। 2014 में 10.2 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ 7.68 मिलियन पर्यटक भारत आये। 2017 में 14.1

प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ पर्यटकों की संख्या ने 10.04 मिलियन का रिकार्ड आंकड़ा छुआ। यह आंकड़े इस बात को स्पष्ट करते हैं कि किस तरह भारत और भारत से जुड़े विषयों पर विदेशी आकर्षित हो रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के अनेक विषय वह अपने शोध कार्यों में उपयोग कर रहे हैं। आज जब वैश्विक व्यवस्था में मंदी आती है और बड़े बड़े नामी बैंक डूब जाते हैं तब नामचीन अर्थशास्त्री भी मंदिर से जुड़ी भारतीय बैंकिंग व्यवस्था को समझने भारत आते हैं। मंदिरों के न्यासियों के द्वारा अपनी भूमिका के समुचित निर्वहन के कारण लोग अपनी जमा पूंजी को मंदिरों में रखना सुरक्षित समझते थे। राजा भी अपना कोश मंदिरों में रखते थे और आपातकाल में मंदिरों से उधर लेने की परंपरा भी रही है।

प्रख्यात आर्थिक इतिहासकार अंगस मेडिसिन के अनुसार *'प्राचीन काल से 18वी शताब्दी तक भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था रहा है।'* एमजीएस नारायणन और केशव वेलुठाट के अनुसार *'दक्षिण भारतीय मंदिर स्वर्ण, रजत तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के गोदाम बन चुके थे।'* विजय नगर स्थित तिरुपति मंदिर इसका प्रमुख उद्धारण है। वर्ष 1429 के एक अभिलेख के अनुसार विजय नगर सम्राट देवराय द्वितीय ने विक्रमादित्यमंगलम नामक गाँव तिरुपति मंदिर को दान दिया था। 1495 में के रामानुजम अयांगार ने अपने कुल अनुदान 65 हज़ार पन्नम में से 13 हज़ार पाँच सौ पन्नम गाँव विक्रमादित्यमंगलम गाँव की सिचाई योजना हेतु दिया। सिचाई योजना के द्वारा कृषि को प्रमुख आर्थिक गतिविधि का प्रयास रहता था। भारत में कभी खाद्य सुरक्षा कानून के द्वारा भोजन व्यवस्था का प्रावधान नहीं था। ग्यारहवी शताब्दी के एक अभिलेख के अनुसार शिक्षकों और पुजारियों के अतिरिक्त तंजौर मंदिर में 609 कर्मचारी कार्यरत थे।

इस तरह देखें तो भारतीय संदर्भ में पर्यटन कूटनीति एक सामान्य सनातनी व्यवस्था है जो वृहद रूप से कार्य करती है। वसुधेव कुटुंबकम के अंदर पर्यटन कूटनीति का सार छिपा है। भारतीय पर्यटन कूटनीति को समझने के लिए किसी रॉकेट साइन्स का ज्ञाता होने की आवश्यकता नहीं है, भारत की सर्वांगीण ज्ञान परंपरा को समझने का वैश्विक आग्रह ही पर्यटन कूटनीति है। इसके साथ साथ जिस तरह भारत में चिकित्सा सेवाओं

का विस्तार हो रहा है तो उस क्रम में भारत में चिकित्सा पर्यटन भी बढ़ रहा है। कुछ साल पहले तक भारत के लोग विदेशों में इलाज़ कराने जाते थे किन्तु आज परिदृश्य बदल गया है। भारत एलोपैथ और आयुर्वेद दोनों विधाओं में विदेशियों को सेवाएँ दे रहा है। भारत का योग वर्तमान में 21 जून को वैश्विक योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। एतेहासिक धरोहरों को समेटे भारतीय सभ्यता, इतिहास और संस्कृति विज्ञान की अग्रणी सभ्यताओं में रही है। आज भारत की ज्ञान परंपरा सम्मान पा रही है किन्तु पूर्व में विदेशी लोगों ने यहाँ आकर हमारे ज्ञान, विज्ञान और धरोहरों को नष्ट करने की कोशिश की।

## वैश्विक प्रभुराम एवं पर्यटन कूटनीति

मुगल काल में कई भारतीय इमारतों को या तो तोड़ा गया या उनका नाम बदलकर मुगलकालीन कर दिया गया। किसी एक इमारत की चर्चा करना या उनका नाम लेना उचित नहीं है। इसके बाद अंग्रेजों ने भारत की सांस्कृतिक विरासत के विराट स्वरूप को महसूस किया। भारतीय शिल्प विज्ञान से सीखा। अपने देश में जाकर उस विज्ञान का लाभ लिया। इमारतें बनवाई और इसके साथ ही भारत की सभ्यता पर हमला करते हुये धरोहरों को नष्ट करने की कोशिश भी की। यानि की हर तरफ से भारतीय संस्कृति, विज्ञान एवं शिल्प पर हमले होते रहे। इन सबके बीच हिंदुस्तान वक़्त के थपेड़े खाते हुये स्वयं को जीवित रखे रहा। भारत के समृद्धशाली विरासत की गतिशीलता कितनी रही है इसका अंदाज़ा सिंधु घाटी सभ्यता से ही आरंभ हो जाता है। मानव सभ्यता की शुरूआत माने जाने वाली सिंधु घाटी सभ्यता एक रहस्यमयी संस्कृति मानी जाती है। भारत के उत्तर पश्चिम के आस पास के इलाकों में दिखने वाली इस सभ्यता के साथ भारत का विस्तार भारत के दक्षिणी इलाकों में किसान समुदाय तक पाया गया। वृहद भारत के अंदर अंतर्निहित अनेक संस्कृतियों के समागम ने भारत को अन्य सभ्यताओं से उन्नत रखा। लोहे, तांबे और अन्य धातुओं के उपयोग के प्रमाण किसी अन्य सभ्यता से पहले भारतीय सभ्यता में मिलते हैं। इन धातुओं का शिल्प निर्माण में बेहद महत्वपूर्ण योगदान है, पर भारत के गौरवशाली इतिहास का केंद्र बिन्दु आज भी प्रभु श्रीराम हैं।

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण का व्यापक वैश्विक प्रभाव पड़ा है। भारत में 2024 में आने वाले पर्यटकों की बढ़ती संख्या इस बात को सत्यापित करती है। पहले आंकड़ों पर ध्यान देते हैं। भारत में जनवरी से मई 2024 के मध्य आने वाले पर्यटकों की संख्या 40.72 लाख रही है। जनवरी से मई 2023 में यह आंकड़ा 37.32 लाख था। वर्ष 2023 से वर्ष 2024 की तुलना करें तो वृद्धि दर 9.1 प्रतिशत रही है। इस कारण विदेशी मुद्रा आय में वृद्धि हुयी है। जनवरी- मई 2023 में विदेशी मुद्रा आय 88,441 करोड़ की तुलना में जनवरी-मई 2024 में विदेशी मुद्रा आय 1,08,362 करोड़ हुयी है। आय में वृद्धि दर 22.52 प्रतिशत की रही है। यह आंकड़े केन्द्रीय पर्यटन मंत्री द्वारा लोकसभा के पटल पर रखे गए आंकड़े हैं। रामराज और वैश्विक संदर्भ में देखें तो श्रीराम का चरित्र और व्यक्तित्व जितना दिव्य और व्यापक है उतना ही विश्वव्यापी है। सिर्फ वर्तमान भारत की सीमाओं तक यह सीमित नहीं है बल्कि चारों दिशाओं में प्रभु राम के नाम का प्रताप अलग अलग स्वरूप में दिखाई देता है। इसको समझने, देखने के लिए विदेशी पर्यटक यहाँ आते हैं। अनेक देशों में, अनेक भाषाओं में, अनेक नामो से प्रभु श्रीराम की कथाएँ हैं।

हिन्दी में रामचरितमानस, संस्कृत सहित कई भाषाओं में राम की कथाएँ हैं। तुलसीदास ने हिन्दी, बाल्मीकी, कालीदास ने संस्कृत में राम का चरित्र चित्रण किया तो कन्नड में ऋषि कंबन द्वारा रचित 'कंब रामायण' में राम के चरित्र का विवरण मिलता है। भारत के बाहर चीन के 'लियो ताउत्स चिंग' का कथानक वाल्मीकि रामायण से संबन्धित है। चीन के उपन्यासकार उचेंग की कथा 'द मंकी हसी ऊंचि' राम भक्त हनुमान की चीनी कथा है। इसके साथ साथ थाईलैंड में 'रामकियेन', इन्डोनेशिया में 'ककविन रामायण', लाओस में 'फालाम' एवं 'पोमचाक' है तो तमिल में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की 'तिरुमगन रामायण'। इतना ही नहीं दक्षिण एशिया के देशों मलेशिया, कंबोडिया, श्रीलंका एवम फिलीपींस तक राम के चरित्र की व्यापकता फैली हुयी है। सिर्फ विदेशों में ही नहीं बल्कि भारत के अंदर भी कई मुस्लिम लेखकों और विचारकों ने प्रभु राम के चरित्र पर उल्लेखनीय काम किया है। अल्लामा इकबाल राम के लिए कहते हैं कि '*है राम के वजूद पर हिंदोस्तां को नाज, अहले नज़र समझते हैं उनको इमामें हिंद*'। सागर निजामी कहते हैं कि '*साहिल ए सरयू यहाँ गंगा यहाँ*

*जमुना यहाँ, कृष्ण और राधा यहाँ, राम यहाँ सीता यहाँ। हिंदीओ के दिल में बाकी है मुहब्बत राम की, मिट नही सकती क़यामत तक, हुकूमत राम की'*।

राम की हुकूमत सदियों तक इसलिए बाकी है क्योंकि राम ने अपने स्वार्थ के लिए विजय प्राप्त नहीं की। बालि और रावण का वध किया तो सुग्रीव और विभीषण को वहाँ का राजा बनाया। लक्ष्मण से संवाद में राम कहते हैं कि *'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मणः रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'*।। इसका अर्थ है कि 'हे लक्ष्मण सोने की लंका भी मुझे अच्छी नही लगती है। माता और मातृभूमि मुझे स्वर्ग से भी बढ़कर है। इसी तरह कबीर भी परमार्थ को जीवन का दर्शन बताते हैं। राम का जीवन भी परमार्थ का जीवन ही रहा। रामराज में अपने लिए नहीं दूसरे के लिए जीवन जीने का वास्तविक चिंतन है। कबीर कहते हैं। *'मरूँ पर माँगू नहीं, अपने तन के काज। परमारथ के कारने, मोहिं न आवै लाज'*। इसका अर्थ है कि मैं मर जाऊँगा किन्तु अपने शरीर के स्वार्थ के लिए नहीं माँगूँगा, परन्तु परमार्थ के लिए माँगने में मुझे लज्जा नहीं लगती। इसी परमार्थ से रामराज का आधारभूत सिद्धान्त प्राप्त होता है। अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण और उसके बाद आने वाले पर्यटकों की बढ़ती संख्या भारत की सफल पर्यटन कूटनीति का परिचायक है।

## धार्मिक पर्यटन बनाम पर्यटन कूटनीति

धार्मिक पर्यटन और पर्यटन कूटनीति दो अलग अलग विषय हैं। धार्मिक पर्यटन को पर्यटन कूटनीति का सिर्फ एक भाग कहा जा सकता है किन्तु यह एक बहुत सशक्त कूटनीति का कार्य करता है। एक ओर कुछ भारतीय धार्मिक पर्यटन के नाम पर सिर्फ घूमने को प्राथमिकता देते हैं तो वहीं भारत में आने विदेशी पर्यटक सिर्फ मौज मस्ती के लिए नहीं बल्कि समझने के लिए आते दिख रहे हैं। भारत की सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन एतेहासिक कलाकृतियाँ हमें हमारे गौरवशाली इतिहास के विराट स्वरूप के दर्शन कराती हैं। दक्षिण भारत के मंदिरों में शिल्प की कारीगरी का एक नमूना तब देखने को मिलता है जब पहाड़ों को ऊपर से नीचे की तरफ काटकर मंदिरों का निर्माण किया गया। प्राचीन काल में निर्मित भारत का शिल्प इतना उन्नत

रहा है कि आज का आधुनिक विज्ञान भी उसके रहस्यों को सुलझाने में नाकामयाब दिखता है।

चाहें हम लेपाक्षी मंदिर के हवा में झूलते हुये खंबों की बात करें या दक्षिण भारत के उन कई मंदिरों की जो पहाड़ को काटकर बनाये गए हैं। जिस समय क्रेन और अन्य औज़ार उपलब्ध नहीं थे उस समय वृहदीश्वर मंदिर के शीर्ष पर किस तरह भारी भरकम कलश को विराजमान किया जाता होगा, यह आज भी एक चमत्कार से कम नहीं है। तमिलनाडू के तंजौर ज़िले में स्थित वृहदेश्वर मंदिर शिव मंदिर है जिसे चोल शासकों के द्वारा ग्यारवी सदी के आरंभ में बनवाया गया था। यह मंदिर कई स्थानों पर आधुनिक विज्ञान को चुनौती दिखाई देता है। ग्रेनाइट से बने मंदिर के आस पास के इलाकों में दूर दूर तक ग्रेनाइट पत्थर की खाने नहीं हैं। किस तरह यहाँ ग्रेनाइट पत्थर को लाया गया होगा यह आज भी रहस्य है। चूंकि उस दौर में परिवहन के साधन इतने सुगम नहीं थे इसलिए इसका महत्व और बढ़ जाता है।

लेपाक्षी मंदिर आंध्र प्रदेश के अनंतपुर ज़िले में लेपाक्षी गांव में स्थित है। ऐसी मान्यता है कि इस गाँव का नाम श्रीराम के आगमन पर पड़ा था। पहले राम, लक्ष्मण और सीता संग उनका यहाँ आगमन हुआ था और बाद में सीताहरण के दौरान गिद्धराज जटायु उनको यहाँ घायल अवस्था में मिले थे। श्रीराम ने घायल जटायु को देखकर लेपाक्षी कहा था। लेपाक्षी एक तेलगू शब्द है जिसका अर्थ है 'उठो पक्षी'। 16वीं शताब्दी में निर्मित लेपाक्षी मंदिर विजयनगर शैली के मंदिरों का विलक्षण उदाहरण है। यहाँ विराजित भगवान गणेश की मूर्ति शिल्प का बेज़ौड़ नमूना है। इस मंदिर की वास्तुकला की एक खास बात यह है कि इसमे सिर्फ भगवान के मंदिर नहीं हैं बल्कि यहाँ नृत्यों और संगीतकारों का भी चित्रण मिलता है। मजबूत पत्थरों को काटकर उन पर की गयी नक्काशी न सिर्फ लुभावनी है बल्कि स्थायित्व लिये हुये भी है। इस मंदिर में कुल 72 खंबे हैं जिन पर मंदिर की आकृति टिकी हुयी है। वास्तुकला के अनुपम विज्ञान को समेटे हुये इनमे एक खंबा ऐसा है जो हवा में झूलता हुआ साफ दिखाई देता है। ज़मीन पर जिस स्थान पर खंबे और भूमि का मिलन होता है वहाँ पर खाली

स्थान हैं। इनके बीच से कोई भी कपड़ा आसानी से निकल जाता है। इस खंबे की लंबाई 27 फिट एवं चौड़ाई 15 फिट के आसपास है।

कोणार्क का सूर्य मंदिर पुरी के उत्तर पूर्वी किनारे पर समुद्र तट के क़रीब निर्मित है। यह मंदिर भारत के बेहद प्राचीन मंदिरों में है और इसे 1236-1264 ईसा पूर्व गंग वंश के राजा नृसिंह देव द्वारा बनवाया गया था। उस समय भी जिस तरह से पत्थर पर नक्काशी करके इस मंदिर को बनाया गया था वह इस बात का प्रमाण है कि हजारों साल पहले भी भारत का शिल्प कितना उन्नत रहा था। भारत की धार्मिक आस्था कितनी प्रबल थी और भारत का विज्ञान सूर्य आदि को अपने इष्ट देव के रूप में स्वीकार कर चुका था। इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि सम्पूर्ण मंदिर परिसर में बारह जोड़ी चक्रों वाले सात घोड़ों से खींचे जाने वाले सूर्यदेव का रथ निर्मित है। यहाँ सूर्य को बिरंचि नारायण के नाम से पुकारा जाता है और मंदिर में कुछ कामुक शिल्पकृतियाँ भी मौजूद रही हैं।

पवित्र मंदिरों और स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूनों से भरपूर तमिलनाडु के मदुरै को भगवान शिव और महाबलीपुरम को भगवान विष्णु के वामन अवतार की कृपाभूमि मानते हैं। यहाँ स्थित मीनाक्षी मन्दिर में कई आकर्षण के केंद्र हैं जैसे हज़ार स्तम्भ मंडपम । इसका वास्तविक नाम स्तंभ मण्डप है। इनमे खास बात यह है कि प्रत्येक स्तंभ को थाप देने से भिन्न भिन्न स्वर निकलते हैं। इस रहस्य को सुलझाने में आज का विज्ञान विफल रहा है। किस तरह से किस विज्ञान के द्वारा इन स्तंभों का निर्माण किया गया है यह उस काल की शिल्प कला को दर्शाता है। इस मंदिर की खूबसूरती सिर्फ इसके शिल्प में निहित नहीं है बल्कि यह भारत के सबसे वैभवशाली मंदिरों में से एक हैं। इस मंदिर के पास इतने ज़्यादा हीरे जवाहरात एवं आभूषण मौजूद हैं कि लोग दातों तले उँगलियाँ दबा लेते हैं। भारत की समृद्ध और धन धान्य से भरपूर परंपरा की कहानी इस मंदिर के द्वारा परिलक्षित होती है। दक्षिण की काशी के रूप में मशहूर कांचीपुरम को मोक्ष का सातवां द्वार भी कहा जाता है। मंदिर और शिल्प पर चर्चा बहुत लंबी हो सकती है। पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक और सम्पूर्ण अखंड भारत में शिल्प, ज्ञान और आध्यत्मिक चेतना के उद्वारण भरे हुये हैं।

## निष्कर्ष

जब वैश्विक स्तर पर विचारधाराओं का टकराव देखा जा रहा है तब सम्पूर्ण विश्व वैश्विक शांति और स्थायित्व की राह देख रहा है। विभिन्न संस्कृतियों की विचारधारा वाले देश आज परस्पर वर्चस्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। इन विचारधाराओं के कुछ समर्थक अपने देश में भी अस्थिरता फैला रहे हैं, उनसे सतर्क रहने की आवश्यकता है। जिस अनुपात में विदेशी पर्यटक भारत आ रहे हैं और यहाँ समय दे रहे हैं इससे एक बात तो स्पष्ट है कि भारत की पर्यटन कूटनीति सफल हो रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा विदेशियों को वैश्विक अस्थिरता के मध्य एक मार्ग प्रदान कर रही है। भारत वैश्विक स्तर पर एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है। यह एक अच्छा संकेत है। इन सबके मध्य हमें कुछ सतर्क रहने की भी आवश्यकता है। जिस तरह धार्मिक स्थानों को पर्यटन के रूप में तैयार किया जा रहा है, उससे राजस्व की प्राप्ति तो हो रही है किन्तु धार्मिक आस्था के केंद्र खिलवाड़ का माध्यम बन रहे हैं। धार्मिक स्थल यदि आस्था के साथ पर्यटन से जुड़े रहेंगे , तो शुभ संकेत हैं। मौज मस्ती के लिए होने वाला धार्मिक पर्यटन सांस्कृतिक जड़ों को कमजोर कर देता है। यदि विदेशी पर्यटकों का भारत को देखने, समझने और मनन करने के लिए भारत आना, भारत को समझना भारत की पर्यटन कूटनीति को सशक्त कर रहा है, तब भारतीय नागरिकों को भी अपने उत्तरदायित्व को गंभीरता से लेना होगा।

## संदर्भ


1. भारत सरकार पर्यटन आंकड़े 2023, भारत सरकार
2. भारतीय धरोहर शोधपत्र, मई-जून 2024 अंक
3. चित्रा त्यागी, स्वास्थ्य संसद स्मारिका 2024